रेडियो नाटक—"आज का युग विज्ञान का है अतः रेडियो की लोकप्रियता निरन्तर वृद्धि पर है। इसीलिए रेडियो के माध्यम से साहित्यिक रचनाओं का प्रचार और प्रसार किया जा रहा है। रेडियो द्वारा प्रसारणार्थ 'लिरिक्स नाटक' रेडियो नाटक कहा जाता है। चूंकि यह मात्र श्रव्य होता है, अतः इसे 'श्रव्य नाटक' भी कहते हैं और चूंकि इसमें ध्वनि की प्रधानता होती है, अतः 'ध्वनि नाटक' कहते हैं, पर रेडियो नाटक अथवा रेडियो नाट्य नाम ही अधिक प्रचलित एवं व्यवहृत है।"

रेडियो नाटक में अङ्क का प्रश्न ही नहीं उठता है। इसमें एक ओर अनेक दृश्य तो हो सकते हैं किन्तु अङ्क नहीं। दृश्यों पर भी किसी तरह का प्रतिबन्ध नहीं है, दो पंक्तियों का भी दृश्य हो सकता है और दो सौ का भी।

प्राचीन नाटकों में जो दृश्य था वह रेडियो नाटक में श्रव्य हो गया है। रंग-मंच नाटकों में प्रायेक वस्तु दृश्य होती है किन्तु रेडियो नाटक में ऐसा नहीं है। रेडियो नाटक में श्रोताओं को सहज बोध कराने के लिये विशेष सावधानी की आवश्यकता है। रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या न्यूनतम होती है। न्यूनता के कारण ही वह सहज रूप

Scanned with CamScanner

में पहचाने जा सकते हैं। ये नाटक अधिक लम्बे नहीं होते अधिक से अधिक आध घण्टे का रेडियो नाटक आदर्श हो सकता है वैसे दस-पन्द्रह मिनट वाले नाटक ने अधिक लोकप्रियता अर्जित की है।

रेडियो नाटक का मूल आधार ध्वनि है। ध्वनि भावाभिव्यक्ति का एक सहज किन्तु प्रमुख साधन है। एक शब्द विभिन्न मुद्राओं, भंगिमाओं से कहा जाने पर विभिन्न भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है। रेडियो नाटक में ध्वनि का उपयोग तीन रूपों में होता है—भाषा, ध्वनि प्रभाव और संगीत।

अतः भाषा ही रेडियो नाटक का मूल आधार है। यह भाषा सरल स्वाभाविक और भावाभिव्यंजक होनी चाहिये, जिसे श्रोता सहज हृदयंगम कर सकें। रेडियो नाटक में भाषा का प्रयोग दो रूपों—कथोपकथन या संलाप के रूप में तथा नैरेशन या प्रवक्ता के कथन के रूप में होता है। "नैरेशन से तात्पर्य नाटक के उस अंश से होता है, जिसमें पात्र नाटक के क्रिया-कलाप का वातावरण निर्मित करता है, आवश्यक विवरण देता है, घटनाओं की शृङ्खला जोड़ता अथवा घटनाओं की आलोचना करता है।

यद्यपि रेडियो रूपक में नैरेटर सरलता से आ सकता है किन्तु रेडियो नाटक में वह जितना ही कम आये उतना ही अच्छा है।

ध्वनि से आशय यह है कि रेल, वर्षा, बादल आदि की ध्वनियाँ जिनका नाटक के प्रसारण में उपयोग किया जाता है। "ध्वनि-प्रभाव और वाद्य संगीत की आवश्यकता पात्रों के कार्यों के लिये पृष्ठभूमि एवं वातावरण निर्माण, भावाभ्यंजन दृश्यान्तर, देशकाल-परिचय आदि के लिये होती है। इनके द्वारा नाटक में सजीवता एवं प्रभावोत्पादकता आती है।"

शिल्प की दृष्टि से रेडियो नाटक के निम्नलिखित रूप हैं—रेडियो नाटक, रेडियो रूपक, रेडियो रूपान्तर, रेडियो फैण्टेसी या अति कल्पना, मोनोलॉग या स्वगत नाट्य, एक पात्रीय नाटक, संगीत, रूपक, झलकियाँ आदि।

रेडियो नाटक की कथा अति संक्षिप्त एवं सरल होती है। उसमें तीव्र वेग भी होता है। इस दृष्टि से यह एकांकी नाटक के अधिक निकट है। परिच्छेद आदि भी एकांकी की भाँति लाघव की अपेक्षा होती है।

रेडियो एकांकी के भेद—रेडियो-एकांकी में एक तथा एक से अधिक भी दृश्य हो सकते हैं। पात्र के माध्यम से कथा कौतूहल का सृजन करती हुई चरम सीमा पर एकांकी का समापन होता है। इसमें कार्य संकलन का पूर्ण ध्यान रखा जाता है। डॉ० वर्मा का 'कलंकरेखा', अश्क का 'अधिकार का रक्षक', भट्ट का 'भवानी' इस वर्ग के एकांकी हैं।

रेडियो रूपक—इसे 'फीचर' भी कहते हैं। इसमें तथ्यों को नाट्य-रूप में प्रस्तुत करते हैं। वाचक (नैरेटर) कथानक तथा वातावरण का परिचय देता हुआ कथा-प्रसंगों को नाटकीय अभिनय के द्वारा प्रस्तुत करता है। इस प्रकार रेडियो रूपक मूलतः वास्तविक घटना का नाटकीय रूप है। इसके दो भेद होते हैं—आलेख्य रूपक तथा सामान्य रूपक। तथ्य प्रधान और शृङ्खलाबद्ध आलेख्य रूपक होता है और तथ्यों के साथ कल्पना का भी जिसमें प्रयोग होता है, उसे सामान्य रूपक कहते हैं। जैसे 'भरत का भाग्य' और 'ऋतुराज'।

Scanned with CamScanner

रेडियो फैंटेसी—जो घटना वास्तविक जीवन में घटित न हो, केवल कल्पना के द्वारा नाट्य रूप में प्रस्तुत हो उसे नाट्य फैंटेसी कहते हैं, जैसे भारतभूषण का 'अजन्ता की गूंज।' इसमें कथा पूर्णतः कल्पित और अलौकिक होती है। इसमें गहरी मनोरागात्मकता का चित्रण होता है इसे 'स्वप्नकथात्मक एकांकी' भी कहते हैं। कभी-कभी फैंटेसी एकांकी न होकर अनेकांकी भी लिखे जाते हैं।

स्वगत नाट्य—इसे अंग्रेजी में मोनोलॉग (Monologue) कहते हैं। इसमें एक पात्र आरम्भ से अन्त तक अपने जीवन की घटना को प्रस्तुत करता है।

संगीत रूपक—यह गीत-प्रधान एकांकी है। एक या दो पात्र घटनाओं को गीतों के द्वारा एक-दूसरे से सम्बद्ध करते चलते हैं। गिरिजा कुमार माथुर और उदय-शंकर भट्ट ने इस प्रकार के संगीत रूपक लिखे हैं।

स्किट या झलकी—हास्य विनोद से मुक्त अत्यन्त लघु नाटिकायें झलकी या स्किट कहलाती हैं। यह रेडियो की ही देन है।

संगीतिका या आपेरा—गीत, संगीत और नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाने वाला एकांकी 'आपेरा' कहलाता है। हिन्दी में इसको 'संगीतिका' नाम दिया गया है। जैसे चिरंजीत का 'पृथ्वीपुत्र'।

झाँकी या टैब्लो—झाँकी में एक छोटे से दृश्य में संकलन-त्रय का निर्वाह करते हुए जीवन के किसी उद्दीप्त क्षण की स्थिति को प्रस्तुत किया जाता है।

Scanned with CamScanner